**सम्पादकीय**
जन्मशताब्दी, एक दुर्लभ सौभाग्य; जो लाभ उठायेंगे वे धन्य हो जायेंगे 2

**खरगोन में 5100 तरुपुत्रों का रोपण**
प्रकृति को समर्पित विराट वृक्षगंगा अभियान 3

**गुरु पूर्णिमा समारोह**
450 बंदियों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली 4

**गुरु पूर्णिमा पर्व**
सौभाग्य एवं उत्तरदायित्वों की याद दिलाई 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अगस्त 2025

वर्ष : 38, अंक : 03
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जुलाई 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

## युग निर्माण सत्संकल्प-8

**चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी और सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।**

### मनुष्यता की प्रथम परीक्षा है मधुरता-शालीनता

हमें संसार में रहना है तो सही व्यवहार करना भी सीखना चाहिए। इतनी सज्जनता तो हर व्यक्ति में होनी चाहिए कि जिससे वास्ता पड़े, उससे नम्रता, सद्भावना के साथ मीठे वचन बोलें। इसमें न तो पैसा खर्च होता है, न समय। जब भी हम किसी से मिलें या हमसे कोई मिले तो प्रसन्नता व्यक्त की जानी चाहिए। किसी से सहयोग मिले या न मिले, हमारा व्यवहार सबके प्रति मीठा और सहानुभूतिपूर्ण ही होना चाहिए। हम अपनी और दूसरों की दृष्टि में सज्जनता और शालीनता से परिपूर्ण एक श्रेष्ठ मनुष्य की तरह अपना आचरण और व्यक्तित्व बना सके, तो समझना चाहिए कि मनुष्यता की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए। कटुवचन मर्मभेदी होते हैं। कटुभाषी निरंतर अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ाता और मित्रों की घटाता जाता है।

### स्वच्छता-पवित्रता ईश्वर की सच्ची भक्ति है

स्वच्छता मानव जीवन की सुरुचि का प्रथम गुण है। कलाकारिता स्वच्छता से आरंभ होती है। हमें अपने शरीर, वस्त्र, उपकरण एवं निवास की स्वच्छता का ऐसा प्रबंध करना चाहिए, जिससे अपने को संतोष और दूसरों को आनंद मिले। निर्मलता, निरोगता, निश्चिंतता और निर्लिप्तता के आधार पर उत्पन्न की गई आत्मा की पवित्रता हमें ईश्वर से मिलाने का पथ प्रशस्त करती है।

अस्वच्छता मनुष्य की आंतरिक और गई-गुजरी स्थिति का परिचय देती है। लापरवाह, आलसी और प्रमादी ही गंदे देखे गए हैं। गंदगी सबको बुरी लगती है और सहज ही घृणा का भाव उत्पन्न करती है। गन्दे को कौन अपने समीप बैठाना चाहेगा?

गंदगी स्वास्थ्य की दृष्टि से अतीव हानिकारक है। जहाँ गंदगी रहेगी वहाँ बीमारी जरूर पहुँचेगी। मनुष्य की मूल प्रकृति गंदगी के विरुद्ध है, इसलिए हम किसी व्यक्ति या पदार्थ को गंदा देखते हैं तो अनायास ही घृणा उत्पन्न होती है। अस्तु जिन्हें मनुष्यता का ज्ञान है, उन्हें गंदगी हटाने का स्वभाव अपनी प्रकृति में अनिवार्यतः जोड़ देना चाहिए।

स्वच्छता को हम अनिवार्य मानें, यही हमारे लिए उचित है। अच्छी आदतों के सहारे परम सौंदर्य से भरे हुए इस विश्व में भगवान की प्रकाशवान कलाकारिता को देखकर आनंद विभोर रहते हुए पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

### भेड़चाल छोड़ो, बहादुर बनो

अच्छा हो हम समझदारी और सज्जनता से भरा हुआ, सादगी का जीवन जिएँ। अपनी बाह्य सुसज्जा वाले खर्च को तुरंत घटा दें और उस बचत को अपनी, अपने परिवार की तथा समाज की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने में लगाने लगें।

सादगी सज्जनता का प्रतिनिधित्व करती है। जिसका वेश-विन्यास सादगीपूर्ण है, उसे अधिक प्रामाणिक एवं विश्वस्त माना जा सकता है। जो जितना ही उद्धतपन दिखाएगा, समझदारों की दृष्टि में उतनी ही इज्जत गिरा लेगा। इसलिए उचित यही है कि अपने वस्त्र सादा रखें, जेवर न लटकाएँ, नाखून और होठ न रंगें, बालों को इस तरह से न सजाएँ जिससे दूसरों को दिखाने का उपक्रम करना पड़े। नर-नारी के बीच मानसिक व्यभिचार का बहुत कुछ सृजन इस फैशन-परस्ती से होता है।

स्वच्छता के साथ जुड़ी हुई सादगी अपने आप में एक उत्कृष्ट स्तर का फैशन है। उसमें गरीबी का नहीं, महानता का पुट है। भेड़चाल को छोड़कर जो विवेकशीलता का रास्ता अपनाता है, वह बहादुर है।

# ईश्वर के दर्शन का शाश्वत विधान

### इतिहास के उदाहरण और शास्त्रों के कथन

आँख से, इन्द्रियों से प्रत्यक्ष ईश्वर का दर्शन करना हो तो उसे व्यक्ति के अंतरंग में छिपी हुई आत्मज्योति के रूप में अथवा इस जगत की जड़-चेतन सत्ता में आलोकित देखा जा सकता है। यही वह विराट् ब्रह्म है, जिसका दर्शन गीता के अर्जुन ने किया था। यशोदा को बालकृष्ण ने इसी ब्रह्म स्वरूप की झाँकी कराई थी। कौशल्या ने पालने में झूलते हुए राम में उसे देखा था। व्यक्ति के शरीर और मन पर छाये कषाय-कल्मषों के अन्तर को चीरकर यदि उसकी मूल सत्ता में ओत-प्रोत सत्य, शिव और सुन्दर को देखा जा सके, तो नर के भीतर नारायण को क्रीड़ा कल्लोल करते हुए देखा जा सकता है। रामायणकार ने *'सीय राममय सब जग जानी'* के रूप में इसी विराट के दर्शन किये थे।

ईश्वर-दर्शन का यही मार्ग दूसरों के लिए भी है। यदि ईश्वर को प्रत्यक्ष ही देखना है तो उसकी झाँकी व्यक्ति की अन्तरात्मा में और विराट् की विश्व चेतना में हो सकती है। इसके लिए दिव्य चक्षु चाहिए। दिव्य चक्षु अर्थात् वह दार्शनिक दृष्टिकोण, जो कलेवर के भीतर प्रवेश करके अन्तःस्थिति की सूक्ष्मता को समझ सकने में समर्थ हो। ईश्वर दर्शन के लिए यह आधार आवश्यक है, कारण कि उसकी स्थूलता तो पंच तत्वों के रूप में ही दीख पड़ेगी। सत्, चित्, आनन्द तो सूक्ष्म ही है, उसे आँखों से नहीं, आत्मानुभूति से ही अनुभव किया जा सकता है। दिव्य चक्षु इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।

शास्त्र ने इस विराट् ब्रह्म का वर्णन कितने ही आलंकारिक रूप में किया है। ऋग्वेद 10/90/12 *'ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्, बाहु राजन्यः कृतः'* मन्त्र में चारों वर्णों को ब्रह्म शरीर कहा है। ऋग्वेद 10/90/1 में उसका उल्लेख *'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपादः'* के रूप में मिलता है। उसे सहस्र अर्थात् अनन्त सिर, आँख, हाथ, पैर वाला बताया गया है। उसने न केवल मनुष्य को, वरन् समस्त पृथ्वी को, समूचे ब्रह्माण्ड को घेर रखा है।

### परमसत्ता का जीवन-सत्ता में समन्वय

यह तो हुआ उसका स्वरूप निर्धारण। अब उसकी अनुभूति कैसे हो? यह प्रश्न सामने आता है। खाद्य पदार्थों को देखने भर से तो काम नहीं चलता, उनके चखने, चबाने और उदरस्थ करने से ही बात बनती है। खाद्य जब पेट में जाकर पचता और रक्त मांस आदि के रूप में शरीर का अंग बनता है, तभी उससे बल एवं जीवन की प्राप्ति होती है। ईश्वर को दिव्य चक्षुओं से देख लेने भर से किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती, ईश्वर-दर्शन का उद्देश्य उस परम सत्ता का जीवन सत्ता में समन्वय होने पर ही पूरा होता है। देखने के लिए तो विराट् ब्रह्म की वे तस्वीरें बाजार से खरीदी जा सकती हैं, जिसमें कृष्ण द्वारा गीता में वर्णित विराट् का आलंकारिक चित्रांकन किया गया है, पर उसे देख लेने भर से किसी का क्या प्रयोजन सिद्ध होगा?

जिस समय मनुष्य को यह अनुभूति होती है कि ईश्वर मेरे अन्दर ही है, उसी समय वह ईश्वर रूप हो जाता है। उसका आचरण एवं चिन्तन भी वैसा ही परिष्कृत हो जाता है, जैसा कि ईश्वर के साथ निरन्तर रहने वाले का होना चाहिए। पारस को छूकर लोहे का सोना हो जाना, चन्दन के समीपवर्ती पादपों में सुगन्ध आना, अग्नि की समीपता से ऊष्णता बढ़ना, समीपवर्ती को छूत लगना यदि सही है तो कोई कारण नहीं कि जिसे अपनी अन्तरात्मा में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव होता है, वह उसी स्तर का बनने में क्यों असफल रहेगा। हाँ, अन्तरात्मा में वैसी अनुभूति न होती हो, जीभ, कान और मस्तिष्क तक ही आत्मज्ञान की विडम्बना उलझकर रह गई हो, तो बात दूसरी है।

### आत्मसत्ता का विस्तार करते चलें

जो सब प्राणियों को अपने में और अपने को सब प्राणियों में देखता है, उन्हें अपने ही समान मानता है, उसे अज्ञानान्धकार में नहीं भटकना पड़ता। यही अद्वैत का प्रतिपादन है। *''हमें दूसरों से वही व्यवहार करना चाहिए, जो उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं।''* यह नीति वचन इसी आत्मानुभूति की ओर इंगित करता है कि हमारी आत्मीयता शरीर, परिवार तक सीमित न रहकर अन्यान्यों तक बढ़ती, विकसित होती चली जाए, सब अपने लगने लगें और अपने भीतर अन्यान्यों की उपस्थिति परिलक्षित होने लगे।

जिस प्रकार शरीर एवं परिवार को अपना मान कर उनकी सुविधा, सुरक्षा एवं उन्नति का ध्यान रखा जाता है, वैसे ही भाव व्यापक होते-होते देश, धर्म, समाज की सीमाओं को पार करते-करते प्राणिमात्र तक फैल पड़ें, तो समझना चाहिए कि नर ने नारायण की, आत्मा ने परमात्मा की, पुरुष ने पुरुषोत्तम की, जीव ने ब्रह्म की स्थिति प्राप्त कर ली। इसी ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करने के उपरान्त आत्मा मोह-आवरणों से मुक्त हो जाती है। आत्मा के निर्मल और व्यापक स्वरूप का आभास होने लगे तो समझना चाहिए कि आत्म-साक्षात्कार का, ईश्वर दर्शन का लक्ष्य पूरा हो रहा है।

(अखण्ड ज्योति, मार्च 1978, पृष्ठ 6 से संकलित, संपादित)

# जन्मशताब्दी, एक दुर्लभ सौभाग्य; जो लाभ उठायेंगे, धन्य हो जायेंगे

## दिव्य चेतना के अवतरण के 100 वर्ष

अखण्ड दीप के प्राकट्य की शताब्दी एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी का अगला वर्ष सन् 2026 हर गायत्री परिजन के लिए सौभाग्य का वर्ष है। वह पावन दिन सन् 1926 में बसंत पंचमी का था, जब प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के बाल्यकाल में उस दिव्य चेतना का अवतरण हुआ था, जो जन्म-जन्मान्तरों से उनका मार्गदर्शन करती आ रही थी। हिमालयवासी उनके गुरु, जिन्हें हम दादा गुरुदेव कहते हैं, प्रकाश पुंज के रूप में उनकी पूजा की कोठरी में प्रकट हुए। उन्होंने बालक श्रीराम को उनकी दिव्यता और अलौकिक सामर्थ्य का बोध कराया, इस जीवन का प्रयोजन बताया तथा इस जन्म की जिम्मेदारियों एवं कार्यक्रमों से अवगत कराया। परम चेतना के उस प्रकाश पुंज को परम पूज्य गुरुदेव ने बसंत पंचमी के उसी दिन 'अखण्ड दीप' के रूप में सहेज लिया। विगत 100 वर्षों से प्रज्वलित परमात्मा की दिव्य चेतना का वह दृश्यमान प्रतीक **'अखण्ड दीप'** आज भी शान्तिकुञ्ज में करोड़ों लोगों के जीवन को प्रकाशित कर रहा है। वह **सिद्ध ज्योति** में परिवर्तित होकर जन-जन में नवप्राणों का संचार कर रहा है।

बाल्यकाल से ही प्रखर साधक परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने पूजा की कोठरी में प्रकट हुए अपने जन्म-जन्मान्तरों के मार्गदर्शक के निर्देशानुसार बसंत पर्व, 18 जनवरी 1926 के उसी दिन से कठोर जीवन साधना के साथ अपना 24 वर्षीय विशिष्ट गायत्री महामंत्र जप साधना महापुरश्चरण भी आरंभ कर दिया था। नवयुग की आवश्यकता के अनुरूप साहित्य सृजन तथा भारत को परतंत्रता से मुक्ति दिलाने के लिए स्वतंत्रता संग्राम में संकल्पपूर्वक सक्रिय भागीदारी का संघर्षात्मक कार्यक्रम भी आरंभ हुआ। ये तीनों कार्यक्रम उस दिव्य चेतना को, जिसे परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी पूजा की कोठरी में **'अखण्ड ज्योति'** के रूप में संरक्षित किया था, सारे विश्व को प्रभावित एवं प्रकाशित करने में समर्थ **'प्रचण्ड ज्योति'** के रूप में परिवर्तित करने का शुभारंभ थे।

हम बसंत पंचमी, 23 जनवरी 2026 के दिन, 100 वर्ष पूर्व युग परिवर्तन के लिए दिव्य चेतना के अवतरण एवं उसके वैश्विक विस्तार के शुभारंभ की ऐतिहासिक घटना की शताब्दी मनाने जा रहे हैं। विगत 100 वर्षों में परम पूज्य गुरुदेव के तपोबल से हजारों, लाखों दिव्य आत्माएँ उनके युग निर्माण आन्दोलन के साथ जुड़ती गईं। शिव के साथ शक्ति के अवतरण की हमारी सनातन परम्परा रही है। इस युग में भी परम पूज्य गुरुदेव के शिव संकल्पों को पूरा करने में सहभागी बनने के लिए शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी का अवतरण हुआ। सौभाग्य एवं संयोग, दोनों ही हैं कि सन् 1926 में ही परम वंदनीया माताजी का जन्म भी हुआ। हम अगले वर्ष उनकी जन्मशताब्दी भी मनाने जा रहे हैं।

## हमारी युग निर्माण योजना

विगत 100 वर्षों में अपने मिशन में जो भी कार्यक्रम हुए, उनका मूलभूत प्रयोजन अखण्ड ज्योति को प्रचण्ड ज्योति के रूप में सारे विश्व में विस्तार देना रहा है। हमें जन-जन के मनों में उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता को अपनाने के लिए आत्मबल जगाना है। लोगों के मन-मस्तिष्क में उस विवेक को, प्रज्ञा को जगाना है, जिससे कि लोगों को अपने हितों के प्रति जागरूक किया जा सके। मानवीय अंतःकरण में उस भावसंवेदना को जगाना है, जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मान्यता प्रबल होती चली जाये और जन-जन के हृदय में यज्ञीय भावनाओं का उदय होता चला जाये। सामूहिक साधना पुरुषार्थ से सूक्ष्म जगत में छाई विषाक्तता का शमन हो, लोगों के मन, वचन और कर्मों में देवत्व का समावेश होता चला जाये तथा धरती पर स्वर्ग जैसा सुखद वातावरण विनिर्मित होता चला जाये।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का रोम-रोम गायत्रीमय था। साधना से ही व्यक्तित्व को परिष्कृत, विचारों को पवित्र तथा अंतःकरण को शुद्ध करने वाली ऊर्जा उत्पन्न होती है। साधना की ऊर्जा से ही वह प्रकाश उत्पन्न होता है, जो हमें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। साधना ही युग परिवर्तन का आधार है। साधना की बुनियाद पर ही विराट अखिल विश्व गायत्री परिवार का विस्तार हुआ है। पिछले कई दशकों में यज्ञीय श्रृंखला, अश्वमेध महायज्ञ, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, व्यक्तित्व परिष्कार शिविर जैसे गायत्री परिवार के जो भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए, वे साधना मूलक ही रहे हैं। उपासना, साधना, आराधना, समयदान, अंशदान, यही परिवर्तन के मूल मंत्र हैं।

## जन्मशताब्दी की सौभाग्यदायी वेला

अखण्ड दीप के प्राकट्य की शताब्दी एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म की शताब्दी की यह वेला बड़ी विशेष है, बड़ी सौभाग्यदायी है। जिनकी साँसें परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के लिए चलती हैं, जिनके हृदय उनके लिए धड़कते हैं, जो स्वयं को उनका शिष्य और साधक मानते हैं उनके लिए यह समय बड़ा मूल्यवान है। जिनके चिंतन में ये विचार आते हैं कि हमें परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के चरणों में बैठने का अवसर नहीं मिला, उनके लिए जन्मशताब्दी की यह वेला बड़ी विलक्षण है।

कभी पूज्य गुरुदेव ने अखंड ज्योति में लिखा था, **''शरीर का परिवर्तन होते ही हम साकार से निराकार हो जाएँगे और अखंड दीपक की जीवंत ज्योति में समा जाएँगे। किसी को यदि हमसे मिलने का मन हो, तो वह अखंड दीपक के अंदर हमारा दर्शन कर सकता है।''**

यह परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म एवं कारण सत्ता के दर्शन एवं अनुभव करने का ही नहीं, उनकी चेतना के वैश्विक विस्तार में सहयोगी बनने का अलौकिक अवसर है। मानव जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य और भगवान की सबसे बड़ी कृपा यही है कि वह परमात्मा के विराट रूप का दर्शन कर सके, उसकी सेवा में जीवन समर्पित हो जाये। **परम पूज्य गुरुदेव को यह अवसर मिला, उन्होंने बिना क्षणभर की देर किये उसे अपना सौभाग्य मानकर गुरुआज्ञा को शिरोधार्य कर लिया। अब हम शिष्य, साधकों की बारी है कि अपने गुरुदेव द्वारा आरंभ किए गए अखण्ड ज्योति को प्रचण्ड ज्योति बनाने के अभियान में संकल्पपूर्वक अधिक से अधिक सक्रिय भागीदारी करें।**

## जन्मशताब्दी की योजनाएँ

**ज्योति कलश यात्रा :** जन्मशताब्दी वर्ष के प्रयाज में इस वर्ष देश-विदेश में ज्योति कलश यात्राएँ पहुँचीं या पहुँच रही हैं। इन यात्राओं ने हर गाँव, नगर, मोहल्ले में नवचेतना जगाई है, युग परिवर्तन के महान अभियान में भागीदारी का आमंत्रण पहुँचाया है, उत्साह बढ़ाया है।

**साधना :** विगत बसंत पर्व से शक्तिपीठों/प्रज्ञा संस्थानों में एवं विभिन्न समूहों में जन्मशताब्दी के निमित्त सामूहिक साधना अनुष्ठान आरंभ हो गए हैं। मानवीय चेतना के परिष्कार एवं वातावरण के परिशोधन के लिए सामूहिक साधना का यह क्रम अनिवार्य है। युगशक्ति गायत्री की व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधना से ही मन, वचन, कर्म में सुधार होगा।

**युग निर्माण सत्संकल्प :** युग निर्माण सत्संकल्प पाठ का एक क्रान्तिकारी अभियान चल पड़ा है। परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त नवयुग का यह संविधान समाज को प्रगति की अभीष्ट दिशा प्रदान करेगा।

**पत्रिका विस्तार :** मिशन की पत्रिकाओं के माध्यम से हर क्षेत्र में जनसंपर्क अभियान को गति दी जा रही है।

सतयुग की वापसी सन्निकट है। भोर की लालिमा की भाँति लोगों को देव संस्कृति के अभ्युदय की अनुभूतियाँ होने भी लगी हैं। ऐसे में ऋषियुग्म की युग निर्माण योजना के प्रति निष्ठावान प्रत्येक देवात्मा का यह धर्म कर्त्तव्य है कि वह महाकाल की पुकार को सुने, समय को पहचाने और इस जीवन में भगवान के साथ साझेदारी करने का जो सौभाग्य मिल रहा है, उसका लाभ उठाने में कोई कोर-कसर न रखे।

मनुष्य सदैव भगवान को सहायता के लिए पुकारता है। कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं, जब भगवान युग परिवर्तन जैसे महान प्रयोजनों में भागीदारी के लिए आमंत्रण देते हैं। पेट-प्रजनन के लिए तो 84 लाख योनियाँ पड़ी हैं, लेकिन परमात्मा के विशेष उपहार के रूप में हमें मानव जीवन मिला है तो उसका उपयोग राम के रीछ-वानर की तरह एवं कृष्ण के ग्वाल-बाल की तरह समझदारी से ही किया जाना चाहिए। भगवान के साथ साझेदारी करने का जो दुर्लभ सौभाग्य हमें मिला है, उसका लाभ उठाते हुए हमें अपने आराध्य के संकल्प के साथ अपने पुरुषार्थ को जोड़ देना चाहिए। 'अखण्ड ज्योति' को 'प्रचण्ड ज्योति' के रूप में परिवर्तित करने के लिए, अपने क्षेत्र को परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और प्रकाश से भर देने के लिए अपने पुरुषार्थ में कोई कोर-कसर नहीं रखनी चाहिए। परमात्मा के विराट स्वरूप की सेवा करते हुए जिस आनन्द की प्राप्ति होती है, उसके लिए तो ऋषि-मुनि अपना पूरा जीवन खपा देते हैं।

## शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में आयोजित होगा जन्मशताब्दी का प्रथम कार्यक्रम

# विराट सक्रिय कार्यकर्त्ता सम्मेलन, 20 से 23 जनवरी 2026

04 जुलाई 2025 को जोन, उपजोन आदि संगठनात्मक इकाइयों से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसे जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की समग्र योजनाओं के क्रियान्वयन का नेतृत्व कर रहे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जन्मशताब्दी वर्ष के विशिष्ट कार्यक्रम अब तक अपनाई गई सक्रियता की पूर्णाहुति नहीं हैं, आगामी 24 वर्षीय विराट कार्ययोजना का शुभारंभ है। इन 24 वर्षों में संगठित और योजनाबद्ध होकर युग चेतना का घर-घर विस्तार किया जाएगा।

### विराट सक्रिय कार्यकर्त्ता सम्मेलन

जन्मशताब्दी के समारोहों का शुभारंभ 20 से 23 जनवरी 2026 (बसंत पंचमी) की तिथियों में आयोजित होने जा रहे **विराट सक्रिय कार्यकर्त्ता सम्मेलन** के साथ होगा। यह सम्मेलन शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में आयोजित होगा। इस सम्मेलन में देश-विदेश में मिशन के प्रचार-विस्तार में प्रमुख योगदान देने वाले कार्यकर्त्ताओं, शान्तिकुञ्ज से टोलियों में जाने वाले समयदानियों, ज्योति कलश यात्राओं के संचालन में अग्रणी योगदान देने वाले परिजनों जैसे लगभग 20 से 30 हजार सक्रिय कार्यकर्त्ता भाग लेंगे। यह सम्मेलन एक संकल्प समारोह के रूप में सम्पन्न होगा, जिसमें कार्यकर्त्ताओं की योग्यता के आधार पर उनकी जिम्मेदारियाँ और दायित्व सौंपे जाने हैं।

### साधकों के महाकुम्भ

अगले वर्ष एक कुम्भ स्तर का विराट आयोजन भी हरिद्वार में आयोजित होगा, जिसकी तिथियाँ 2027 में हरिद्वार में होने वाले अर्धकुम्भ के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए निर्धारित की जायेंगी। तत्पश्चात् अगले चार वर्षों तक हर वर्ष देश की चारों दिशाओं में से किसी एक में इसी प्रकार के विराट कार्यक्रम होंगे। **यह कार्यक्रम पूरी तरह साधना प्रधान होंगे।**

### शान्तिकुञ्ज से रवाना हुई टोलियाँ

बसंत पर्व-2026 को आयोजित होने वाले विराट कार्यकर्त्ता सम्मेलन में भाग लेने वाले कार्यकर्त्ताओं के चयन की प्रक्रिया आरंभ हो गई है। गुरुपूर्णिमा के बाद शान्तिकुञ्ज से 50 से अधिक टोलियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में रवाना हो रही हैं, जो जगह-जगह गोष्ठियाँ लेकर जन्मशताब्दी वर्ष के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देंगी। यह टोलियाँ कार्यकर्त्ताओं से मिलकर उनकी योग्यता (इंजीनियरिंग, टेक्निशियन, विद्युत, चिकित्सा, प्रदर्शनी, जलकल, वाहन चालक, सुरक्षा, भोजनालय, गायक, वादक, वक्ता, श्रमदान), परिस्थितियों और समयदान, अंशदान जैसे बिंदुओं पर चर्चा करेंगी। यह जानकारियाँ जन्मशताब्दी समारोहों के रूप में हरिद्वार तथा देश के अलग-अलग स्थानों पर आयोजित होने वाले साधकों के विराट कुम्भों के सुव्यवस्थित एवं प्रभावशाली संचालन के लिए एकत्रित की जा रही हैं।

### संपर्क कीजिए

**जन्मशताब्दी कार्यालय, शान्तिकुञ्ज**

4 जुलाई 2025 से शान्तिकुञ्ज में 'जन्मशताब्दी कार्यालय' का शुभारंभ हो गया है। श्रीश्यामबिहारी दुबे जी ने इसका कार्यभार सँभाल लिया है। जोनल कार्यालयों के सहयोग से टोलियों का संचालन, साधकों का पंजीयन, परिजनों का मार्गदर्शन, पूछताछ जैसे सभी कार्य इसी कार्यालय से होंगे। इस कार्यालय के संपर्क सूत्र हैं :-

फोन : 01334-311043
01334-311011 (Ext: 1512)
मोबाइल/व्हॉट्सएपः 9258369608
ईमेलः janmshatabdi2026@awgp.org

### साधकों का पंजीयन

जन्मशताब्दी के विराट समारोहों में भागीदारी के लिए विशिष्ट साधना अनुष्ठान करना अनिवार्य होगा। इन साधकों का ऑनलाइन पंजीयन आरंभ कर दिया गया है। पंजीकृत साधकों को साधना अनुष्ठान के अनुशासन, अनुबंध एवं साधना विधि का विवरण शान्तिकुञ्ज से ही भेजा जायेगा। साधना के लिए आवश्यक माला, गोमुखी, आसन, जैसी वस्तुएँ भी शान्तिकुञ्ज के पवित्र एवं साधनात्मक वातावरण में संस्कारित करने के पश्चात् साधकों को भेजी जायेंगी।

# 5100 तरुपुत्रों का रोपण

## प्रकृति को समर्पित विराट वृक्षगंगा अभियान

वृक्षारोपण के लिए उपस्थित हजारों प्रकृति प्रेमियों की उपस्थिति में वृक्षों का पूजन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

**यह कार्यक्रम अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के लिए समर्पित रहा।**

**खरगोन। मध्य प्रदेश**

खरगोन जिले के ग्राम पिपलिया बुजुर्ग (झिरनिया) में दिनांक 6 जुलाई 2025 (रविवार) को 5100 तरुपुत्र रोपण महायज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रकृति और पर्यावरण के पोषण के लिए समर्पित इस विशिष्ट यज्ञ में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम को अत्यंत प्रेरणादायी और लोकप्रिय बना दिया।

ग्राम पिपलिया बुजुर्ग में आयोजित तरुपुत्र महायज्ञ में 2400 जोड़ों ने भागीदारी कर 5100 पौधों का रोपण किया। खरगोन जिले के लगभग 50 गाँवों से पधारे 8,000 से अधिक परिजनों की सहभागिता ने इसे एक जन-अभियान का रूप दे दिया।

कार्यक्रम के दौरान जैसे ही वृक्षारोपण प्रारंभ हुआ, इंद्रदेव ने अमृततुल्य वर्षा कर अपनी प्रसन्नता के संकेत दिये। इस अवसर पर प्रकृति की छटा देखते ही बनती थी। चारों ओर हरियाली, भावों से भरा जनसमूह और भूमि की सौंधी-सौंधी सुगंध निमाड़ की पुण्यभूमि की दिव्यता को अभिव्यक्त कर रहे थे। वृक्षगंगा अभियान के इस महायज्ञ ने सिद्ध किया कि जब भावनाएँ पवित्र होती हैं, तो प्रकृति स्वयं आशीर्वाद देती है।

**हम आने वाली पीढ़ियों का भविष्य रोप रहे हैं।**
**- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी**

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं उपस्थित वरिष्ठ जनों ने यज्ञ के साथ वृक्ष पूजन एवं तरुमिलन का भावविभोर कर देने वाला संस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''हम आज यहाँ केवल पेड़ लगाने नहीं आए हैं, हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य का रोपण करने आए हैं। हमारे देवता हमारी प्रकृति में हैं। पेड़, नदी, मिट्टी; यदि ये सुरक्षित हैं तो समस्त मानवता सुरक्षित है। यही वर्तमान समय की सबसे महत्त्वपूर्ण पुकार है, जिसे हमें सुनना ही होगा।''

डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री मंत्र को मानव जीवन के सौभाग्य का मंत्र बताया। उन्होंने कहा कि जो यह बोध करा दे कि हमारा आराध्य हमारे भीतर है, वही मंत्र है और वह चेतना हम सबको 'देवता' बनने का आह्वान करती है। भारत समस्याओं की नहीं, समाधान की भूमि रहा है।

ग्राम पिपलिया बुजुर्ग की पहाड़ी पर वृक्षारोपण का विहंगम दृश्य

# शिक्षा-स्वावलम्बन की ज्योति जला रहा है

## गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी

**निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रारंभ**

हमारे शक्तिपीठ समाज के प्रकाश स्तंभ (लाइट हाउस) हैं। अपने क्षेत्र के अज्ञान, अभाव, अशक्ति को दूर करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

**मुनस्यारी, पिथौरागढ़। उत्तराखण्ड**

शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित हिमालय की गोद में बसा उच्च स्तरीय साधना केन्द्र, गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी अब परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षाओं के अनुरूप जीवन साधना और जीवन विद्या के आलोक केन्द्र के साथ-साथ अपने क्षेत्र में शिक्षा और स्वावलम्बन की भी ज्योति जला रहा है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री जितेंद्र पुनेठा ने बताया कि वहाँ 1 जुलाई से कम्प्यूटर प्रशिक्षण की कक्षाएँ आरंभ कर दी गई हैं। प्रथम सत्र में 10 कम्प्यूटरों के माध्यम से 75 से अधिक युवक-युवतियाँ प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जा रहा है।

गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी में शिक्षा एवं स्वावलम्बन का अभिनव क्रम देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की प्रेरणा से आरंभ किया गया है। **उन्होंने कहा कि हमारे शक्तिपीठ समाज के प्रकाश स्तंभ (लाइट हाउस) हैं। अपने क्षेत्र के अज्ञान, अभाव, अशक्ति को दूर करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।**

गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी अपने क्षेत्र के लोगों की चारित्रिक, बौद्धिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए निरंतर समर्पित रहेगा। कम्प्यूटर की शिक्षा आज दैनंदिन जीवन की आवश्यकता हो गई है, इसलिए हम जरूरतमंदों को निःशुल्क प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी बना रहे हैं।

### जन्मशताब्दी साधना अभियान

**झाँसी। उत्तर प्रदेश** : श्री गायत्री शक्तिपीठ आंतिया तालाव एवं श्री गायत्री प्रज्ञापीठ, प्रेम नगर, झाँसी में जन्म शताब्दी वर्ष-2026 के उपलक्ष्य में विशेष साधना अभियान प्रारंभ किया गया है। स्थानीय वरिष्ठ परिजन श्री राजेन्द्र द्विवेदी ने बताया कि दोनों केन्द्रों पर प्रत्येक माह के दो दिन सायंकाल सामूहिक गायत्री महामंत्र जप और उसके बाद युग साहित्य के स्वाध्याय का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसमें नगर के सभी नैष्ठिक कार्यकर्त्ता भाई-बहिन बड़ी श्रद्धापूर्वक भाग ले रहे हैं।

## माँ के मातृत्व की जीवंत प्रेरणा है शान्तिकुञ्ज द्वारा चलाई जा रही

# माता भगवती अन्नपूर्णा योजना

परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्मशताब्दी के दिव्य अवसर पर शान्तिकुञ्ज द्वारा माता भगवती अन्नपूर्णा योजना चलाई जा रही है। यह योजना परम वंदनीया माताजी की पीड़ित मानवता के प्रति जीवंत भाव संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है। गिरों को उठाना, पीड़ितों का सहारा बनाना, अपने प्रेम और प्रोत्साहन से लोगों में आत्मविकास का उत्साह जगाना, यही तो है परम वंदनीया माताजी के व्यक्तित्व की पहचान। माता भगवती अन्नपूर्णा योजना उनके व्यक्तित्व की जीवंत अभिव्यक्ति है। इसके अंतर्गत जिला चिकित्सालय से लेकर हरिद्वार के अनेक स्थानों पर नियमित रूप से शुद्ध एवं सुपाच्य भोजन आवंटित किया जाता है।

## टीबी पीड़ितों में बाँटी निक्षय पोषण किट

शान्तिकुञ्ज ने दिनांक 12 जुलाई 2025 को शान्तिकुञ्ज स्थित आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में निक्षय पोषण किट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें देवसंस्कृति विवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने हरिद्वार जनपद के पचास से अधिक टीबी पीड़ितों को निक्षय पोषण किट की। इस किट में पीड़ितों को तेल, मूंगफली, आटा आदि उच्च प्रोटीनयुक्त खाद्य सामग्री दी गयी।

यह कार्यक्रम सी.एम.ओ. डॉ. आर.के. सिंह की विशेष उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उन्होंने शान्तिकुञ्ज के सेवाकार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सामाजिक सहयोग से टीबी जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीजों को मानसिक बल मिलेगा एवं समाज में सहयोग की भावना बढ़ेगी।

अंत में सभी लाभार्थियों को नियमित आहार और स्वास्थ्य की देखभाल के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए। इस अवसर पर व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, शान्तिकुञ्ज की चिकित्सालय प्रभारी डॉ. मंजू चोपदार, डॉ. अनिल कुमार वर्मा (डीटीओ) ने लाभार्थियों का मनोबल बढ़ाया।

डॉ. पण्ड्या जी एवं सी.एम.ओ. डॉ. आर.के. सिंह टी.बी. के मरीजों को निक्षय पोषण किट देते हुए

## दिव्यांग विद्यालय के 448 विद्यार्थियों को स्कूल बैग किट दिये

दिनांक 7 जुलाई को शान्तिकुञ्ज के समीप चल रहे अजरानंद अंध विद्यालय, सप्तऋषि क्षेत्र, हरिद्वार के 448 विद्यार्थियों को स्कूल बैग किट प्रदान किए गए। गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज की व्यवस्था मंडल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी के नेतृत्व में स्कूल बैग वितरण का यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन्होंने कक्षा 1 से 10 तक के सभी विद्यार्थियों को स्कूल बैग के साथ कॉपियाँ, पेन, पेंसिल, पानी की बोतल सहित अन्य आवश्यक शैक्षणिक सामग्री के सेट प्रदान किये। इन्हें पाकर लाभार्थी बच्चों के चेहरों पर प्रसन्नता के भाव देखते ही बनते थे।

इस विद्यालय में अध्ययन करने वाले बच्चे दिव्यांग हैं या गरीब परिवारों से आते हैं। इस कार्यक्रम में अजरानंद अंध विद्यालय के अध्यक्ष स्वामी स्वयमानंदजी, उपाध्यक्ष विचित्रानंद जी एवं प्रधानाचार्य श्री पवन शर्मा आदि उपस्थित रहे।

**इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज द्वारा हरिद्वार जनपद के बहादराबाद ब्लॉक के सभी सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 3000 से अधिक स्कूल बैग किट वितरित किये गए हैं।**

## 500 लोगों का नशा छुड़ाया

### 50,000 लोगों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया

**अमेठी। उत्तर प्रदेश**

''नशे के शिकार व्यक्ति को दुत्कारें नहीं, उसके साथ खड़े हों, यही सबसे बड़ी सेवा है। अगर हम मिलकर एक व्यक्ति को भी नशा छुड़ाने में मदद करते हैं, तो हम कई पीढ़ियों की जिंदगी सँवारते हैं।''

अमेठी के जिला युवा समन्वयक डॉ. प्रवीण सिंह 'दीपक' ने अपने जिले में चलाए जा रहे नशामुक्ति अभियान की शानदार सफलता से उत्साहित होकर उपरोक्त टिप्पणी की है। उल्लेखनीय है कि अमेठी में 251 कुंडीय राष्ट्र जागरण यज्ञ के लक्ष्य की सिद्धि के लिए जिला संगठन द्वारा उसी निष्ठा और तत्परता के साथ अनुयाज के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। डॉ. प्रवीण सिंह ने बताया कि गायत्री महायज्ञ और उसके अनुयाज के क्रम में जिले के 500 से अधिक लोग, जो नशे के चंगुल में फँस चुके थे, उनकी लत छुड़ाने में गायत्री परिवार ने बड़ी महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। महायज्ञ के बाद से वे 50,000 से अधिक लोगों को आजीवन नशा न करने का संकल्प दिला चुके हैं।

## 60 वाँ रक्तदान शिविर

### 174 सदस्यों ने रक्तदान किया

**जमशेदपुर। झारखण्ड**

नवयुगदल युवा प्रकोष्ठ एवं प्रज्ञा महिला मंडल टाटानगर के तत्त्वावधान में 29 जून को बिष्टुपुर ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 174 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। प्रांतीय युवा समन्वयक श्री संतोष कुमार राय ने 60वीं बार रक्तदान करके पीड़ित मानवता की सेवा एवं युग निर्माण आन्दोलन के प्रति समर्पण की उदात्त भावनाओं का परिचय दिया।

प्रांतीय युवा समन्वयक श्री संतोष कुमार राय ने 60वीं बार रक्तदान कर प्रस्तुत किया सेवा भावना का आदर्श

शिविर का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि श्री अजय पांडे जी, वरिष्ठ वित्त पदाधिकारी, न्यूवोको विस्टा कंपनी एवं अन्य गणमान्य अतिथियों ने रक्तदान शिविर की सराहना करते हुए अपनी शुभकामनाएँ दीं। सांसद श्री विद्युत वरन महतो जी ने शिविर में उपस्थित होकर समस्त रक्तदाताओं का मनोबल बढ़ाया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में शिविर संयोजक श्री आलोक नारायण सिंह के साथ नवयुग दल एवं प्रज्ञा महिला मंडल के कार्यकर्त्ताओं का सराहनीय योगदान रहा।

**प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण** : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

# गुरु पूर्णिमा पर्व पर श्रद्धा, संवेदना और सृजनात्मक भावनाओं का विस्तार

## 250 से भी अधिक दीक्षा संस्कार हुए

**चित्तौड़गढ़, राजस्थान**

गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व अत्यंत श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पर्व से एक दिन पूर्व समस्त परिजनों ने सामूहिक जप किया एवं सायंकाल में दीपयज्ञ का आयोजन हुआ।

पर्व के दिन प्रातःकाल आठ पारियों में पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। इसमें 1500 से अधिक परिजनों ने हिस्सा लिया। 250 से भी अधिक परिजनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ग्रहण की। विद्यारंभ, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत, नामकरण एवं पुंसवन संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न करवाये गये। समस्त उपस्थित परिजनों को निःशुल्क प्रज्ञा साहित्य का वितरण किया गया। यज्ञ का संचालन परिव्राजक श्री जयप्रकाश, श्री कंवर लाल एवं श्रीमती गायत्री धाकड़ द्वारा किया गया।

चित्तौड़गढ़ में मनाया जा रहा गुरुपूर्णिमा पर्व

## 450 बंदियों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली

**नर्मदापुरम। मध्य प्रदेश**

केंद्रीय कारागार नर्मदापुरम में बंदियों ने गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व मनाते हुए खण्ड अ में 190 बंदी भाइयों ने एवं खण्ड ब में 260 बंदी भाइयों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर अपने जीवन को संवारने का संकल्प लिया। सभी बंदियों ने इस अवसर पर गुरु दीक्षा में दुष्प्रवृत्तियों को छोड़कर सत्प्रवृत्तियों को अपनाने का संकल्प लिया।

कारागारों में बंदी सुधार कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभा रहे श्री प्रेमलाल कुशवाहा ने बताया कि कारागार के दोनों खण्डों में गायत्री परिवार द्वारा पूर्व में ही सत्साहित्य पुस्तकालय की स्थापना की गई है। बंदीगण इसका भरपूर लाभ ले रहे हैं। बंदीगण गायत्री उपासना एवं गायत्री मंत्र लेखन भी बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं।

गुरुपूर्णिमा समारोह में श्री प्रेमलाल कुशवाहा सहित गायत्री परिवार के कई वरिष्ठ परिजन तथा कारागार का पूरा स्टाफ उपस्थित था।

**साधना स्थली बन गया है जेल परिसर।**
**-कारा अधीक्षक**

गुरुपूर्णिमा समारोह में कारा अधीक्षक श्री संतोष सोलंकी जी मुख्य रूप से उपस्थित थे। उन्होंने बड़े प्रफुल्लित स्वरों में बताया कि मैं जब-जब भी जेल का निरीक्षण करता हूँ, मुझे बंदी भाई यहाँ मंत्र लेखन करते हुए या स्वाध्याय करते हुए दिखते हैं। गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे बंदी साधना अभियान से यह जेल परिसर ना होकर साधना स्थली के रूप में नजर आता है। इसके लिए मैं गायत्री परिवार की पूरी टीम को हृदय से बधाई व धन्यवाद देता हूँ।

गुरु पर्व पर अपने दीक्षा सेट दिखाते बंदीगण

## प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा की तैयारियाँ कर रहे विद्यार्थियों ने युगऋषि से जुड़ने के सौभाग्य की अनुभूति की

**मुखर्जी नगर, नई दिल्ली**

दिल्ली के मुखर्जी नगर में प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के बीच सक्रिय युवा चेतना केन्द्र में गुरु पूर्णिमा पर्व बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। गायत्री परिवार की नियमित गतिविधियों में भाग लेने वाले अनेक विद्यार्थियों ने इसमें भाग लेते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी को अपनी श्रद्धांजलि दी।

गुरुपर्व के उपलक्ष्य में अखंड जप, प्रज्ञा गीत, दीप यज्ञ के कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार में निदेशक पद पर कार्यरत श्री अखिलेश पांडे जी ने जीवन में अध्यात्म के अवलम्बन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। शाखा कार्यवाहक श्री मनीष कुमार ने युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के साथ जुड़ने के सौभाग्य की अनुभूति कराई।

प्रबुद्ध युवाओं को संबोधित करते मनीष कुमार एवं अखिलेश पांडे

## पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणाएँ, संकल्प एवं सम्मान

### पॉलीथीन का प्रयोग न करने तथा वृक्षारोपण करने के संकल्प दिलाए

**अलवर । राजस्थान**

गायत्री शक्तिपीठ अलवर में गुरुपूर्णिमा पर्व बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ मनाया गया। पर्व के अवसर पर सर्वप्रथम शक्तिपीठ में स्थापित सजल श्रद्धा एवं प्रखर प्रज्ञा स्मारकों में पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी के चरणकमलों का पंचद्रव्यों के साथ अभिषेक हुआ। उसके पश्चात 9 कुंडीय यज्ञ शाला में गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें सैकड़ों परिजनों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। यज्ञ की पूर्णाहुति में उपस्थित श्रद्धालुओं को पॉलिथीन का उपयोग न करने तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने के संकल्प दिलाये गए।

यज्ञ के अवसर पर अन्नप्राशन, पुंसवन, विद्यारम्भ एवं दीक्षा संस्कार सम्पन्न हुए। यज्ञ संचालन श्री सतीश बड़ाया, श्री मुरारी लाल शर्मा एवं श्री शुभम शर्मा की टोली ने किया।

श्री सतीश बड़ाया जी ने सभी को गायत्री महामंत्र के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व के संबंध में उद्बोधन दिया। यज्ञ की समाप्ति पर शक्तिपीठ की मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी डॉ. श्रीमती सरोज गुप्ता जी ने सभी को व्यास पूर्णिमा की शुभकामनाएं दीं ।

### सेवा का सम्मान

**कुरुक्षेत्र। हरियाणा**

गायत्री शक्तिपीठ कुरुक्षेत्र में गुरु पूर्णिमा पर्व पूर्ण श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पर्व से एक दिन पूर्व परिजनों के द्वारा सामूहिक अखण्ड जप एवं दीप यज्ञ का आयोजन हुआ। गुरुपूर्णिमा के दिन सैकड़ों परिजनों ने यज्ञ में भाग लिया। पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी आगंतुक परिजनों को दो-दो पौधे भी प्रदान किए गए। गायत्री परिवार की वयोवृद्ध कार्यकर्त्री श्रीमती दर्शना देवी तथा श्री वीरभान गिल, श्री योगराज शास्त्री एवं श्री ललित सारस्वत को गायत्री चेतना के विस्तार के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ अलवर में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गुरुपूर्णिमा पर्व

## परंपरागत समारोहों ने किया नवचेतना का संचार

### गुरुदेव के जीवन संस्मरण सुनाए

**जमशेदपुर। झारखंड**

गायत्री चेतना केंद्र, भालूबासा में नवयुगदल युवा प्रकोष्ठ एवं प्रज्ञा महिला मण्डल के संयुक्त प्रयास से गुरुपूर्णिमा पर्व पर बड़ा सुंदर आयोजन हुआ। प्रातः 3 घण्टे का सामूहिक गायत्री मंत्र जप, तत्पश्चात् गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती जसवीर कौर ने पूज्य गुरुदेव के जीवन के अनेक संस्मरण सुनाकर सभी परिजनों में नवीन चेतना का संचार किया। उन्होंने 2026 में दिव्य अखण्ड ज्योति एवं वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी के आयोजन की रूपरेखा पर भी प्रकाश डाला। सायंकाल में दीपयज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

### आपदा में दिवंगतों को श्रद्धांजलि

**थुरल, कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ थुरल में प्रज्ञा मंडल धीरा एवं थुरल के गायत्री परिजनों एवं स्थानीय निवासियों के द्वारा गुरु पूर्णिमा पर्व पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में भाग लेते हुए परिजनों ने मंडी में आई प्राकृतिक आपदा के समय दिवंगत हुई आत्माओं की शांति हेतु एवं घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु आहुतियाँ प्रदान कीं। शक्तिपीठ के संस्थापक श्री जगदीश वाशल व अजीत राणा ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि गंगा, गऊ, गुरु एवं गायत्री भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। गुरु पूर्णिमा पर्व गुरुअनुशासन को जीवन में धारण करने का पर्व है।

### माता भगवती देवी गौशाला में सेवा साधना का विस्तार

**पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश**

श्री वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ गन्ना समिति पूरनपुर में गुरु पूर्णिमा पर्व की पूर्व संध्या पर दीपयज्ञ का आयोजन हुआ एवं पर्व के दिन प्रातःकाल माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर, पूरनपुर में कई पारियों में विशाल नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का कार्यक्रम हुआ। श्री राजू खण्डेलवाल ने गायत्री माता के वस्त्राभूषणादि भेंट कर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

यज्ञ के पश्चात् गौशाला पर नवनिर्मित माता भगवती देवी भोजनालय का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी पूरनपुर श्री अजीत प्रताप सिंह तथा नायब तहसीलदार श्री अभिषेक त्रिपाठी जी भी उपस्थित हुए। श्री अजीत प्रताप सिंह जी ने माता भगवती देवी गौशाला को शान्तिकुञ्ज का ही छोटा रूप बताया। गौशाला व्यवस्थापक श्री अनन्तराम पालिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

### डॉ. साहू करेंगे प्रज्ञा अभियान का विस्तार व वृक्षारोपण

**मोहारा, बालोद। छत्तीसगढ़**

गायत्री प्रज्ञापीठ बालोद में सामूहिक जप, यज्ञ आदि कार्यक्रमों के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व पूर्ण श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। अनेक परिजनों ने सवा लक्ष गायत्री मंत्र जप अनुष्ठान का संकल्प लिया। इस शुभ अवसर पर 'एक वृक्ष माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत श्रीराम स्मृति उपवन में वृक्षारोपण भी किया गया। डॉ. गोपाल साहू ने पाक्षिक की 25 प्रतियों की सदस्यता ग्रहण करते हुए अपने क्षेत्र में जन-जन तक पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने की शुरुआत की। उन्होंने ग्राम कसौंदा के तालाब पर बरगद का वृक्ष लगा कर उसकी सुरक्षा का संकल्प लिया।

मोहारा में श्रीराम स्मृति उपवन में तथा तालाब के किनारे वृक्षारोपण

## सामूहिक विद्यारंभ संस्कार एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ

**राजनांदगांव। छत्तीसगढ़**

जिले की प्रतिष्ठित शाला, गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में गुरुपर्व पर गायत्री यज्ञ एवं विद्यारंभ संस्कार का भव्य आयोजन हुआ। इसमें कक्षा नर्सरी से 12वीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिक्षकों ने विद्यारंभ संस्कार कराने वाले विद्यार्थियों का तिलक कर एवं उन पर पुष्प वर्षा कर अपना आशीर्वाद दिया और सभी विद्यार्थियों ने अपने गुरुजनों के चरण स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों ने नित्य गायत्री मंत्र जप करने का संकल्प भी लिया।

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी। नौवीं कक्षा की छात्रा ऋषिका जोशी ने बहुत सुन्दर शब्दों में गुरु का महत्त्व बताया। शिक्षिका श्रीमती भारती यादव के मार्गदर्शन में गुरु वंदना पर मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति हुई।

प्रधानाचार्या श्रीमती शैलजा नायर ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है, इनसे श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है। गुरुपूर्णिमा उत्सव में गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष बृजकिशोर सुरजन सहित समस्त गणमान्य एवं शिक्षकगण उपस्थित थे।

गुरुपर्व पर यज्ञ करते गायत्री विद्यापीठ के बच्चे

**जो मन की लालसाओं का गुलाम है, वह कभी प्रतिभावान और दूसरों का नेतृत्व करने योग्य नहीं बन सकता।**

# नवयुग की दिव्य चेतना से आलोकित हो रहा है समाज

## बच्चों को व्यक्तित्व विकास की बहुमूल्य प्रेरणाएँ दीं

**राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में कैरियर संबंधी विषयों पर विद्यार्थियों और शिक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए एक विशेष सभा का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में युवाओं के प्रेरक, पथ प्रदर्शक एवं गायत्री परिवार के ओजस्वी वक्ता डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा थे। उन्होंने बड़े रोचक एवं आसान तरीकों से बच्चों को व्यक्तित्व को निखारने और सफलता के पथ पर बढ़ते चलने की प्रेरणाएँ दीं। डॉ. गोपाल कृष्ण जी वर्तमान में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एचओडी, कम्प्यूटर साइंस, पब्लिक रिलेशन ऑफिसर जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण दायित्व सँभाल रहे हैं।

डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा ने बच्चों को जीवन लक्ष्य का बोध कराया, संयम और साधनात्मक जीवन जीते हुए महानता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी, उन्हें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सदुपयोग की जानकारी दी, आत्मविश्वास बढ़ाने के उपाय बताये। शिक्षकों और अभिभावकों को भी बच्चों के सहयोगी बनने और उन्हें सद्गुणी, संस्कारवान बनाने के सूत्र समझाये।

कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को स्वयं को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प दिलाया गया। विद्यालय की सांस्कृतिक विभाग प्रभारी श्रीमती रूपाली गाँधी के द्वारा आभार प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष बृजकिशोर सुरजन सहित अन्य पदाधिकारी श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, श्री राजेश जैन, श्री गगन लड्ढा, निकुंज सिंघल, सूर्यकान्त चितलांग्या, श्री नंदकिशोर सुरजन की विशेष उपस्थिति रही।

गायत्री विद्यापीठ के बच्चों एवं शिक्षकों को संबोधित करते डॉ. गोपाल शर्मा

## विगत दो वर्षों से निभा रही हैं यज्ञाचार्य की भूमिका

### नारी शक्ति का अभिनन्दन

**बेंगलुरु। कर्नाटक**

गायत्री परिवार बेंगलुरु की नारी शक्ति ने जून 2023 में प्रत्येक रविवार को यज्ञ-संस्कार के संचालन का संकल्प लिया था। संकल्प की सूत्रधार रीता रजक के नेतृत्व में बहिनों ने दो वर्षों तक यह संकल्प पूरी निष्ठा के साथ निभाते हुए सिद्ध किया कि नारी केवल प्रेरणा नहीं, कर्मयोग की प्रतिमूर्ति भी है।

गायत्री परिवार बेंगलुरु के समस्त कार्यकर्त्ताओं ने सभी यज्ञाचार्य बहिनों का अभिनन्दन किया। उन्होंने अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह यज्ञ यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहेगी और नई बहिनें इस कार्यक्रम में जुड़ती जायेंगी।

युग चेतना विस्तार के लिए समर्पित बैंगलुरू की युवतियाँ चेतना केन्द्र पर यज्ञ संचालन करते हुए

## बच्चों के चेहरों पर झलकी उज्ज्वल भविष्य की आस

**वाराणसी। उत्तर प्रदेश**

### बाल सुधार गृह में कार्यशाला

गायत्री परिवार वाराणसी की रामनगर शाखा द्वारा राजकीय संप्रेक्षण गृह/बाल सुधार गृह/बच्चा जेल रामनगर, वाराणसी में 'बाल सुधार के स्वर्णिम सूत्र' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें भाग ले रहे बच्चों के नेत्र, चेहरे और वाणी से युगऋषि के द्वारा बताये स्वर्णिम सूत्रों का प्रभाव स्पष्ट झलकता रहा। कार्यशाला ने बच्चों में आत्मसुधार की हूक जगाई। बच्चों ने गायत्री महामंत्र की नियमित उपासना से अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने का संकल्प व्यक्त किया तथा हर सप्ताह या हर पंद्रह दिन में यह कार्यक्रम आयोजित करने का आग्रह किया। इस अवसर पर बच्चों के चेहरों पर उज्ज्वल भविष्य की आस की जो भावभंगिमा दिखाई दी, वह अविस्मरणीय थी।

कार्यशाला का संचालन कर रहे गायत्री परिवार के परिजनों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि प्रारब्ध वश इन बच्चों से जो अपराध हुए हैं, गायत्री उपासना के प्रभाव से उनके पापों का शमन हो, वे अच्छे नागरिक बनें। युगऋषि की प्रेरणा का प्रकाश उनके जीवन में नई रोशनी लाए, उनके जीवन को परिष्कृत, परिमार्जित करे।

## 95 बच्चों ने गुरुदीक्षा ली

**सुन्दरबनी, राजौरी। जम्मू-कश्मीर**

जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्र सुंदरबनी में गायत्री परिवार की अत्यंत सक्रिय एवं लोकप्रिय शाखा ने दिनांक 22 जून से 25 जून तक कन्या कौशल शिविर एवं दिनांक 26 जून से 29 जून तक युवा कौशल शिविर का शानदार आयोजन किया। इसके संचालन के लिए खण्डवा, मध्य प्रदेश से पूर्णिमा, निकिता आदि युवतियों की क्रान्तिकारी टोली पहुँची थी।

शिविर अत्यंत ऊर्जादायी और प्रभावशाली था। शिविर से प्रभावित होकर 95 बच्चों ने गुरु दीक्षा ग्रहण की। सभी ने अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए जीवन की एक बुराई छोड़ने और अच्छी आदतों को अपनाने की देवदक्षिणा भी दी।

शिविर में भाग ले रही कन्याओं एवं किशोरों के सहयोग से सुंदरबनी में नशा मुक्ति एवं जनजागरूकता रैली का भी आयोजन किया गया। इस रैली ने गायत्री परिवार की ओर पूरे नगर का ध्यान आकर्षित किया।

### कन्या/किशोर कौशल प्रशिक्षण शिविर

घर-घर संपर्क अभियान चलाकर युगऋषि के विचार पहुँचाए गए।

इन शिविरों के आयोजन में गायत्री परिवार सुंदरबनी के प्रमुख कार्यवाहक श्री अशोक कुमार, श्रीमती डॉ. अंजना वर्मा सहित अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। आयोजकों का मानना है कि इन शिविरों से परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में नवचेतना विस्तार में बड़ा सहयोग मिलेगा।

सुंदरबनी के शिविर में गुरुदीक्षा लेने वाली बेटियाँ और नगर में निकली रैली

**बिलासपुर। छत्तीसगढ़**

छत्तीसगढ़ के प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ द्वारा गायत्री शक्तिपीठ, विनोबा नगर, बिलासपुर में दिनांक 29 जून को कन्या कौशल एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 95 कन्याओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती निरूपमा शुक्ला, शिक्षिका ने बालिकाओं को अत्यंत ज्ञानवर्द्धक उद्बोधन प्रदान किया। सुश्री रूकमणी बंछोर, श्रीमती पूर्णिमा श्रीवास, प्रांतीय समन्वयक श्री ओम प्रकाश राठौर एवं प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के सदस्यों द्वारा भी बालिकाओं को सारगर्भित मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

## छत्तीसगढ़ में गाँव-गाँव गायत्रीमय हो रहे हैं

### गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

**कुरुद, धमतरी। छत्तीसगढ़**

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत 30 जून को कुरुद ब्लॉक के सिवनी खुर्द ग्राम में 110 परिवारों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये गये। श्री दिलीप नाग ने इस अभियान को समाज में बढ़ते अनीति, अत्याचार, अपराध के वातावरण के समाधान स्वरूप विचार और संस्कार परिवर्तन का आधार बताया। यजमानों ने देव दक्षिणा स्वरूप एक-एक बुराई छोड़ने का संकल्प लिया।

यह यज्ञ अभियान 50 से अधिक पुरोहितों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। अभियान की सफलता में ग्राम सिवनी खुर्द के प्रज्ञा परिजनों के अतिरिक्त समस्त ग्राम वासियों, कुरुद ब्लॉक के समन्वयक, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं समस्त मण्डलों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

### 51 बहिनों के पुंसवन संस्कार हुए

**कुरुद, धमतरी। छत्तीसगढ़**

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत कुरुद ब्लॉक के ग्राम मौरीकला, ग्राम मोगरा और ग्राम चर्रा में गर्भवती बहिनों के पुंसवन संस्कार के कार्यक्रम आयोजित हुए। तीनों गाँवों में कुल 51 बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराए। उन्हें गायत्री चालीसा, मंत्र लेखन पुस्तिका एवं सत्साहित्य भेंट किया गया, ताकि वे स्वाध्याय एवं साधनात्मक दिनचर्या अपनाकर चरित्रवान एवं स्वस्थ शिशु को जन्म दे सकें।

ग्राम चर्रा में हुआ सामूहिक पुंसवन संस्कार समारोह

### गायत्री माता की प्राणप्रतिष्ठा हुई

**राखी, अभनपुर, नवापारा। छत्तीसगढ़**

अभनपुर ब्लॉक के नया रायपुर सेक्टर-25 के ग्राम-राखी में वेदमाता गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा एवं पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का तीन दिवसीय आयोजन सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ गायत्री साधक श्री यशवंत वर्मा ने माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की। उन्होंने कहा कि गायत्री ही वह प्रकाश है, जो व्यक्ति को भटकावों और झंझावातों से बचाकर उसे सुरक्षित और सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

तीन दिवसीय कार्यक्रम से पूरा गाँव गायत्रीमय हो गया। मंगल कलश यात्रा एवं दीपयज्ञ ग्रामवासियों के विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। गुरूदीक्षा, पुंसवन, मुंडन, विद्यारंभ एवं जन्मदिन संस्कार भी बड़ी संख्या में हुए।

## अंतरराष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर विद्यालयों में दिया संदेश

**अकोला। महाराष्ट्र** : अकोला में पुलिस अधीक्षक श्री अर्चित चांडक जी की अध्यक्षता में दिनांक 26 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस मनाते हुए 'मिशन उड़ान' के अंतर्गत व्यसनमुक्ति कार्यक्रम एवं रैली का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सभी पुलिस स्टेशनों के अंतर्गत स्कूलों में आयोजित किया गया था। गायत्री परिवार की ओर से जिले में नशा मुक्ति का क्रान्तिकारी अभियान चला रहे डॉ. सुरेश राठी ने इन कार्यक्रमों को संबोधित किया।

पुलिस अधीक्षक श्री चांडक जी को सम्मानित करते प्रधानाचार्य

नोबेल हाईस्कूल एवं जागृति हाईस्कूल में विशाल कार्यक्रम हुए। इसमें आठवीं से दसवीं कक्षा तक के छात्र उपस्थित हुए। दीप प्रज्वलन एवं देशभक्ति गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, तत्पश्चात् पुलिस अधीक्षक श्री चांडक जी ने उन्हें संबोधित किया। उन्होंने नशे के दुष्प्रभावों की व्यावहारिक जानकारियाँ देते हुए बच्चों को जीवन बर्बाद कर देने वाली नशे की घातक लत से बचने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री मनोहर जी, सौ. कोलमकर, श्री वखरे जी सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी छात्रों ने शपथ लेकर भविष्य में किसी भी प्रकार का व्यसन न करने का संकल्प लिया। श्री गोपाल मुकुंद ने समस्त उपस्थित गणमान्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

## ज्ञानदीक्षा समारोह के साथ मनाया प्रवेशोत्सव

**नवापारा। छत्तीसगढ़** : शासकीय प्राथमिक शाला खोली पारा में शाला प्रवेश उत्सव के साथ ज्ञान दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया। गायत्री शक्तिपीठ से पधारे श्रीवास्तव जी ने इसका संचालन करते हुए विद्यार्थियों को नियमित गायत्री मंत्र जप करने की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों को उनके जन्मदिन पर वृक्षारोपण कर उनका संरक्षण करने, आलस्य-प्रमाद जैसे दुर्गुणों से दूर रहने जैसे संकल्प भी करवाये गये।

ज्ञानदीक्षा समारोह में कई विद्यालयों के प्रधानाचार्य, शिक्षक उपस्थित थे। गायत्री परिवार के श्रीवास्तव जी ने उन सभी से अपने विद्यालयों में भी ऐसे ज्ञानदीक्षा समारोहों के आयोजन की परम्परा आरंभ करने तथा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के समारोहों का उद्देश्य विद्यार्थियों में भावनात्मक विकास एवं सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि करना है।

**हँसी मन की गाँठें खोलती है। अपनी ही नहीं, दूसरों की भी।**

# कई केन्द्रीय मंत्रियों एवं विशिष्ट गणमान्यों तक पहुँचा युग निर्माण सत्संकल्प

## गायत्री परिवार के माध्यम से वैश्विक स्तर पर हो रहे भारतीय संस्कृति के विस्तार एवं जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इटली की राजधानी रोम में 19 से 21 जून 2025 तक की तिथियों में आयोजित द्वितीय संसदीय अंतरधार्मिक संवाद सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर लौटे। इस प्रवास में उन्होंने अपनी सनातन संस्कृति और परम्परा के अनुरूप विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भाव को प्रगाढ़ करने के लिए युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव का सार्वभौम संदेश विश्व के मनीषियों और पुरोधाओं तक पहुँचाया। पोप और इटली की प्रधानमंत्री सहित विश्व की अनेक हस्तियों से मुलाकात हुई, संवाद हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का यह प्रवास भारत वर्ष और भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ाने वाला था।

भारत लौटने के बाद आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 30 जून को दिल्ली गए। उन्होंने वहाँ भारत सरकार के कई वरिष्ठ मंत्रियों एवं गणमान्यों से मुलाकात की। परस्पर संवाद में जहाँ भारतीय संस्कृति के उदात्त आदर्शों को जनमानस में प्रतिष्ठित करने संबंधी विषयों पर चर्चा हुई,

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देसंविवि. माननीय श्री पीयूष गोयल जी से भेंट करते हुए तथा मान.श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी एवं नागालैण्ड की सांसद श्रीमती एस. फांगनोन को युग निर्माण सत्संकल्प भेंट करते हुए

वहीं उन्हें विश्व धर्म सम्मेलन में भारत की उपलब्धियों से भी अवगत कराया गया।

### केन्द्रीय मंत्रियों से हुई मुलाकात

30 जून के दिल्ली प्रवास में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुलाकात जिन केन्द्रीय मंत्रियों से हुई, वे हैं वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री माननीय श्री पीयूष गोयल जी, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के माननीय केंद्रीय मंत्री श्री चिराग पासवान जी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार जी, शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री माननीय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने मंत्रियों से संबंधित विषयों पर चर्चा करते हुए भारत के उत्कर्ष में अध्यात्म की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने जन्मशताब्दी वर्ष की विशेष कार्ययोजना समझाने के साथ कहा कि गायत्री परिवार राष्ट्र की उन्नति और विश्व शान्ति के लिए अथक प्रयास कर रहा है। हम अपने कार्यक्रमों से समाज में, गाँव-गाँव में जनचेतना जगा रहे हैं, हर व्यक्ति में नैतिकता, संवेदना, समन्वय-सहकार, राष्ट्रभक्ति की भावना जगा रहे हैं।

### उत्तर प्रदेश के मंत्रीगणों से मुलाकात

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, माननीय प्रति कुलपति, देसंविवि की नई दिल्ली में उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) माननीय श्री दयाशंकर सिंह जी तथा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) सहकारिता विभाग माननीय श्री जे.पी.एस. राठौर जी से भेंट हुई।

### जे.एन.यू. के कुलाधिपति जी से मिले

नीति आयोग के माननीय सदस्य एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की डॉ. विजय कुमार सारस्वत जी तथा एक महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय प्रतिष्ठान 'विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली' के महानिदेशक श्री सचिन चतुर्वेदी जी से मुलाकात हुई। दोनों के साथ आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दिशा पर सारगर्भित चर्चा हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर परम पूज्य गुरुदेव के विचार साझा करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास में मानव-मूल्यों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता बतायी।

### नागालैण्ड की सांसद श्रीमती फांगनोन

राज्यसभा सांसद श्रीमती एस. फांगनोन कोन्यक जी (नागालैंड) से आत्मीय शिष्टाचार भेंट की। उनके साथ हुई चर्चा पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध आध्यात्मिक परंपराओं, महिला सशक्तीकरण और भारतीय संस्कृति के सार्वदेशिक मूल्यों पर केन्द्रित रही। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि श्रीमती फांगनोन जी का नेतृत्व, सामाजिक प्रतिबद्धता एवं सांस्कृतिक जागरूकता अत्यंत प्रेरणादायक है।

### परिवर्तन का आधार बनेगा युग निर्माण सत्संकल्प

केन्द्रीय मंत्रियों एवं अन्य गणमान्यों के साथ हुई आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की मुलाकात में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित और 'इक्कीसवीं सदी का संविधान' के रूप में चर्चित 'युग निर्माण सत्संकल्प' पर विशेष चर्चा की। उन्होंने कहा कि इनका नित्य वाचन मनःस्थिति में बड़ा सकारात्मक बदलाव लाता है। हमारा यह अभियान लोगों में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी बढ़ाने का अभियान है। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने सभी गणमान्यों को युग निर्माण सत्संकल्प की एक-एक प्रति भेंट भी की।

### इंडिया हैबिटैट सेंटर में पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय की स्थापना

इंडिया हैबिटैट सेंटर, नई दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर के. जी. सुरेश जी से भेंट की। आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने उन्हें पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य सेट भेंट किया। यह साहित्य अब इंडिया हैबिटैट सेंटर के पुस्तकालय में शोध, अध्ययन एवं सार्वजनिक उपयोग हेतु उपलब्ध रहेगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी प्रो. के.जी. सुरेश को पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय भेंट करते हुए

# राजभवन, लखनऊ में मना अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

## गायत्री परिवार के युवाओं ने समारोह की गरिमा बढ़ायी

**लखनऊ। उत्तर प्रदेश**

21 जून 2025 को लखनऊ में राजभवन में बृहद् स्तर पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। गायत्री परिवार की 'दिया' टीम ने इसमें भागीदारी करते हुए समारोह की गरिमा बढ़ायी।

राजकीय आयोजन में भाग लेते गायत्री परिवार के युवा

दिया, लखनऊ ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर तीन प्रमुख स्थानों पर कार्यक्रम सम्पन्न कराए। राजभवन में भागीदारी के अलावा महर्षि विद्या मंदिर, आई. आई.एम रोड लखनऊ में योग दिवस मनाया गया, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। श्री के.एल. शास्त्री स्मारक नर्सिंग कॉलेज आई.आई.एम. रोड, लखनऊ में सम्पन्न कराए गए योगाभ्यास में नर्सिंग स्टुडेंट्स के साथ टीचिंग व प्रशासनिक स्टाफ ने भी बड़ी संख्या में भागीदारी की। सभी प्रतिभागियों ने यौगिक जीवन शैली अपनाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रमों का संचालन गायत्री परिवार की योग ट्रेनर श्वेतांबरा चौहान के नेतृत्व में हुआ। उनके साथ योग्यता शुक्ला, देवांश सिंह एवं नितिन सिंह जी ने अहम् भूमिका निभाई।

# श्रावण में राज्यपाल महोदय ने किया गायत्री यज्ञ

## पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-भक्ति के भाव में डूबे राज्यपाल

सावन के प्रथम सोमवार, 14 जुलाई के पावन दिन उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) जी ने अपने परिवारी जनों के संग गायत्री यज्ञ किया। उन्होंने इसे सम्पन्न कराने हेतु शान्तिकुञ्ज से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तथा यज्ञाचार्यों की टोली को आमंत्रित किया था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने यज्ञ के कर्मकाण्ड के साथ श्रावण मास में गायत्री उपासना तथा यज्ञ की वैदिक महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने श्रावण मास को आत्मा को पावन करने का काल कहा है। यह तप, साधना और सेवा का विशेष अवसर है, जिसमें किया गया प्रत्येक आध्यात्मिक प्रयास कई गुना फलदायी होता है।''

माननीय राज्यपाल की परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी, शान्तिकुञ्ज एवं आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के प्रति अकूत आस्था है। श्रद्धा-भक्तिभाव से सम्पन्न इस यज्ञ ने सम्पूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। सभी ने आत्मिक तृप्ति, तुष्टि, शान्ति की गहन अनुभूति की।

यज्ञ करते राज्यपाल दम्पति एवं यज्ञ कराते डॉ. चिन्मय जी

### युग निर्माण सत्संकल्प अभियान को सराहा

इससे पूर्व देसंविवि के प्रति कुलपति, आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी माननीय राज्यपाल महोदय को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित युग निर्माण सत्संकल्प का चित्र भेंट करने राजभवन गए थे। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र निर्माण के एक विशिष्ट अभियान के रूप में 'युग निर्माण सत्संकल्प पाठ' का वैश्विक कार्यक्रम चलाये जाने की जानकारी उन्हें दी। माननीय ले.ज. गुरमीत सिंह जी ने इस अभियान को दूरगामी परिणाम देने वाला एक अत्यंत प्रभावशाली कदम बताया।

# गृह प्रवेश यज्ञ प्रबुद्ध गणमान्यों की भागीदारी

## सामुदायिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की प्रेरणा दी

**ठाणे। महाराष्ट्र :** 'दिया' मुम्बई ने अपनी वैदिक ऋषि परम्परा को प्रोत्साहित करते हुए 29 जून को ठाणे में बनर्जी परिवार का गृह प्रवेश गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न कराया। इस कार्यक्रम में भाग ले रहे सभी लोगों को युगऋषि के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद और प्रगतिशील विचारों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। समस्त विज्ञ जनों को उनकी सामुदायिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की प्रेरणा दी गई। दीपशिक्षा और सुदेब बनर्जी परिवार ने इस प्रेरणादायी आयोजन के लिए दिया की टीम का हृदय से आभार व्यक्त किया। सभी प्रतिभागियों को युगसाहित्य, गायत्री चालीसा, मंत्र लेखन पुस्तकें, सद्वाक्य एवं युग निर्माण सत्संकल्प वितरित किये गये।

गृह प्रवेश के अवसर पर गायत्री यज्ञ करते बनर्जी दम्पति

# जन्मशताब्दी को ध्यान में रखते हुए मुरादाबाद रेल मण्डल का सहयोग

अगले वर्ष शान्तिकुञ्ज द्वारा आयोजित किए जा रहे जन्मशताब्दी वर्ष के विराट कार्यक्रमों को देखते हुए उत्तर रेलवे के मुरादाबाद मण्डल का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है।

मुरादाबाद मंडल की वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक (फ्रेट) श्रीमती ऋचा शर्मा जी शान्तिकुञ्ज आईं। उन्होंने शान्तिकुञ्ज स्थित रेलवे आरक्षण कार्यालय का निरीक्षण किया और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेंद्र गिरि जी से भेंट कर जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी ली। उन्होंने यात्रियों की सुविधा को प्राथमिकता दी और कार्यालय के लिए नए पैसेंजर रिजर्वेशन सिस्टम तथा अन्य संबंधित उपकरण तत्काल प्रभाव से देने की मंजूरी प्रदान की। इससे शान्तिकुञ्ज के रेलवे काउंटर से टिकट बुकिंग प्रक्रिया और भी सुगम हो जाएगी।

श्रीमती ऋचा शर्मा को सम्मानित करते श्री योगेन्द्र गिरि

**मनुष्य का व्यवहार ही वह दर्पण है, जिसमें उसका व्यक्तित्व भली भाँति देखा जा सकता है।**

# निमाड़ क्षेत्र में नवयुग की आस्था का संचार, नई स्थापनाएँ हुईं

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय बायें डेडगाँव में और दायें सिंघाना में आयोजित प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा के लोकार्पण समारोहों को संबोधित करते हुए

नवयुग की चेतना का वैश्विक विस्तार कर रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 6 एवं 7 जुलाई को निमाड़ क्षेत्र में आयोजित कई प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए पहुँचे थे। उन्होंने खरगोन जिले के ग्राम पिपलिया बुजुर्ग में आयोजित 5100 तरुपुत्र महायज्ञ में उपस्थित होकर हजारों कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाते हुए उनके युग निर्माणी संकल्पों को दृढ़ता प्रदान की (समाचार पृष्ठ 3 पर देखें)। अपने दो दिवसीय प्रवास में वे धार जिले के डेडगाँव एवं सिंघाना में आयोजित 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' के लोकार्पण समारोहों में और लिंबोल गाँव में आयोजित वृक्षारोपण के कार्यक्रम में उपस्थित हुए। अंतिम कार्यक्रम बड़वानी जिले के अंजड़ में था, जिसके माध्यम से उन्होंने श्रोताओं से युग निर्माण सत्संकल्प को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

## डेडगाँव एवं सिंघाना में गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का लोकार्पण हुआ

धार जिले के डेडगाँव में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गुरुदेव-माताजी के स्मारकों का लोकार्पण समारोह आयोजित गया था। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस कार्यक्रम में दीप महायज्ञ के अवसर पर पहुँचे। उन्होंने श्रद्धा और उल्लास से भरे सैकड़ों साधकों की उपस्थिति में गुरुस्मारकों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का दिव्य संदेश सुनकर समूचा परिसर दिव्यता और आत्मिक चेतना से झिलमिला उठा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का अवतरण देवात्माओं को आत्मबल सम्पन्न एवं ज्ञानवान बनाने के लिए हुआ है। उनके प्रखर विचार एवं दिव्य संरक्षण में अपने दीपक आप बनो। दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय आत्मबल और आत्मज्ञान पर विश्वास करो। जो गुण परमात्मा में हैं, वही प्रत्येक मानव में भी अंतर्निहित हैं। आवश्यकता जीवन साधना करते हुए अपनी क्षमताओं को पहचानने की है। जीवन में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़कर समाज की सेवा करने वालों का जीवन धन्य हो जाता है।

### गायत्री मंत्र मात्र शब्द नहीं, वह चेतना है जो जीवन को दिशा देती है

युगऋषि की दिव्य चेतना के प्रखर प्राण पुंज आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री शक्तिपीठ सिंघाना में हजारों साधकों की उपस्थिति में 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर दिये युग संदेश में उन्होंने गायत्री मंत्र के गूढ़ रहस्य समझाये। उन्होंने कहा कि वेदों को जन्म देने वाली, पापों का नाश करने वाली, हमारे व्यक्तित्व को पवित्र बनाने वाली और भावनाओं को उदात्त करने वाली मंत्र शक्ति को हम 'माँ गायत्री' कहते हैं। यह केवल शब्द नहीं, चेतना है, जो जीवन को दिशा देती है।

उन्होंने गुरु-शिष्य संबंधों की प्रगाढ़ता के लिए मार्गदर्शन करते हुए कहा कि जो वचन गुरु कहे, वही शिष्य का धर्म बन जाता है। जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी यदि शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करता है, तो वही सच्ची श्रद्धा कहलाती है। जब यह भाव जाग्रत् होता है कि गुरुदेव और माताजी हमें देख रहे हैं, हमारा संरक्षण कर रहे हैं, तो यही विश्वास हमारे भीतर श्रद्धा का दीप जलाता है।

## लिंबोल गाँव में वृक्षारोपण

धार जिले के लिंबोल गाँव में वृक्षारोपण का कार्यक्रम था। डॉ. चिन्मय जी ने उपस्थित लोगों में प्रकृति पूजन और वातावरणीय चेतना के जागरण का संदेश दिया, संकल्प जगाए। उन्होंने नीम, बबूल और पीपल जैसे जीवनदायी वृक्षों का रोपण किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने प्रकृति और पर्यावरण के प्रति लोगों को उनकी जिम्मेदारी सिखाते हुए कहा कि हमारे ऋषियों ने अपने जीवन भर के तप से यह चिंतन दिया कि सृष्टि के दो रूप हैं, एक दृश्यमान रूप-पर्यावरण और दूसरा सूक्ष्म रूप-वातावरण, जिनका अन्योन्याश्रित संबंध है। आज प्रकृति के दूषित होने से मनुष्य की सोच और भावनाएँ भी विकृत हुई हैं। पूज्य गुरुदेव ने बताया है कि विचारों का परिष्कार और भावनाओं का शुद्धिकरण ही आज की समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण हर व्यक्ति का परम धर्म है।

## नवयुग का संविधान, अखण्ड भारत का सपना

**कार्यक्रम का समापन 108 जोड़ों द्वारा भारत माता की आरती एवं युग निर्माण सत्संकल्प के सामूहिक वाचन के साथ हुआ।**

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अंजड़ शाखा को युग निर्माण सत्संकल्प का चित्र भेंट करते हुए

अखंड दीपक केवल एक लौ नहीं, बल्कि वह चेतना है जो युग निर्माण की दिशा में हमारे संकल्प को प्रकाशित करती है। नवयुग का संविधान-युग निर्माण सत्संकल्प स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज के निर्माण का मार्ग है। इन्हीं विचारों की बुनियाद पर परम पूज्य गुरुदेव का सतयुग की वापसी का संकल्प पूरा होगा।

डॉ. चिन्मय जी के निमाड़ प्रवास का अंतिम कार्यक्रम 7 जुलाई को बड़वानी जिले के अंजड़ में स्थित नक्षत्र गार्डन में हुआ। जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में आयोजित इस विशिष्ट सभा को उन्होंने 'नवयुग का संविधान, अखंड भारत का सपना' विषय से संबोधित किया।

अंजड़ पहुँचने पर सर्वप्रथम सालीटांडा के आदिवासी जनों ने पारंपरिक नृत्य के साथ डॉ. चिन्मय जी का स्वागत किया। उनकी प्रस्तुति में सांस्कृतिक गरिमा और लोकचेतना का भावपूर्ण समावेश था। तत्पश्चात् लाल मशाल के प्राकट्य के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी विषयक आदिवासी गीत ने सबका मन मोह लिया।

## भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में एमबीबीएस में अध्ययन कर रहे 461 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हुए

### विशेष उपलब्धियाँ

**गंज बासौदा, विदिशा। मध्य प्रदेश**

वर्ष 2024 में विदिशा जिले में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की प्रभारी श्रीमती रश्मि पोरवाल के मार्गदर्शन में संपन्न हुई परीक्षा में 12 तहसीलों के 9000 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। गंज बासौदा तहसील में सर्वाधिक 2848 विद्यार्थी शामिल हुए। तहसील प्रभारी श्री सुरेश सैनी के अथक प्रयासों से शासकीय अटल बिहारी चिकित्सा महाविद्यालय में एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहे 461 डॉक्टरों ने भी इस परीक्षा में भाग लिया, जो एक विशेष उपलब्धि कही जा सकती है। इस सफलता में प्रदीप बाल्मिक सर्जन और रमेश विश्वकर्मा तथा राकेश पांडे का भी प्रशंसनीय योगदान रहा।

भा.सं.ज्ञान परीक्षा देते एमबीबीएस के विद्यार्थी

### विश्व पुलिस खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता

**पानीपत। हरियाणा** : हरियाणा पुलिस में हवलदार श्रीमती संतोष शर्मा ने विश्व पुलिस खेल प्रतियोगिता में कुश्ती में स्वर्ण पदक जीतकर एक इतिहास रचा है। संतोष शर्मा यह गौरव प्राप्त करने वाली देश की पहली महिला पुलिस कर्मचारी हैं। पानीपत में गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. गुरुदत्त अनेजा ने बताया कि संतोष शर्मा गायत्री उपासक हैं। उनके पिता श्री राम निवास शर्मा मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ता हैं।

## नशा मुक्ति कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटकों ने छोड़ी गहरी छाप

**रिसाई पारा, धमतरी। छत्तीसगढ़**

अन्तरराष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस-31 मई तथा 26 जून के अवसर पर गायत्री परिवार धमतरी द्वारा रिसाई पारा स्थित गायत्री शक्तिपीठ धमतरी में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में रिसाई पारा वॉर्ड के नवनिर्वाचित पार्षद श्री मेघराज ठाकुर उपस्थित हुए। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि ''आज नशा पूरे समाज के लिए एक गंभीर समस्या बन चुका है, इसलिए हर परिवार को नशा मुक्ति अभियान की शुरूआत स्वयं अपने घर से ही करनी चाहिए।''

कार्यक्रम के दूसरे चरण में रिसाई पारा में एक जागरूकता रैली निकाली गई, जो रत्नाबाँधा चौक पर पहुँचकर समाप्त हुई। इस अवसर पर अंचल के प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री आकाश गिरि गोस्वामी एवं उनके सहयोगियों के द्वारा एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। नाटक में नशे के स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख-शान्ति और आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले गंभीर दुष्परिणामों की जानकारी लोगों को दी। यह पूरा कार्यक्रम गाँववासियों की आँखें खोलने वाला था, जिसकी सभी ने बहुत सराहना की। उपस्थित जन समूह को नशा छोड़ने तथा नशामुक्त जीवन जीने हेतु संकल्प दिलाए गए।

> 'हर परिवार को नशा मुक्ति अभियान की शुरूआत अपने घर से ही करनी चाहिए।
> – श्री मेघराज ठाकुर, पार्षद

रिसाई पारा में निकली नशामुक्ति रैली एवं नुक्कड़ नाटक की झाँकी

कार्यक्रम की अध्यक्षता गायत्री शक्तिपीठ धमतरी की प्रमुख प्रबंध ट्रस्टी श्रीमती खिलेश्वरी किरण दीदी ने की। जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग एवं श्री हर्षद मेहता की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार साहू एवं आभार प्रदर्शन श्री शेखन साहू ने किया। आयोजन की सफलता में समस्त प्रज्ञा परिजनों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

**मूर्खता का सबसे अच्छा प्रतिकार उसकी उपेक्षा है। अहंकारी के नटखटपन पर ध्यान न देना ही समझदारी है।**

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब गुरुपूर्णिमा पर्व पर शान्तिकुञ्ज आए श्रद्धालुओं को गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलाते हुए

# गुरुपर्व ने सौभाग्य एवं उत्तरदायित्वों की याद दिलाई

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में 8,9 एवं 10 जुलाई को तीन दिवसीय पावन गुरुपूर्णिमा महापर्व का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 10 जुलाई 2025 को अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों अनुयायियों का प्रतिनिधित्व करते हुए करोड़ों शिष्यों के जीवन पथ प्रदर्शक सद्गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी का विधि-विधान के साथ भावभरा पूजन किया।

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने गुरु पर्व पूजन के बाद संदेश दिया। इससे पूर्व के दो दिनों में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, आदरणीया शेफाली जी, व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी सहित कई वरिष्ठ वक्ताओं ने तीन दिवसीय समारोह को सम्बोधित किया। तीनों दिन परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी की गुरुरूप में प्राप्ति के सौभाग्य तथा जन्मशताब्दी से जुड़े उत्तरदायित्वों की विस्तार से चर्चा हुई।

रैली के समापन पर ऋषियुग्म के दिव्य स्मारकों की आरती

प्रज्ञा अभियान के राजस्थान संस्करण का विमोचन

यज्ञोपवीत संस्कार कराते परिजन

शान्तिकुञ्ज में आयोजित तीन दिवसीय गुरु पूर्णिमा पर्वोत्सव में 24 घण्टे का अखण्ड जप, गुरुदेव-माताजी के विशेष संदेश, विविध संस्कार, पर्व की सायं ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा संचालित दीपयज्ञ आदि भी सम्पन्न हुए।

**जनजागरण रैली :** पर्व का शुभारंभ 8 जुलाई को प्रातःकाल जनजागरण रैली के साथ हुआ। शान्तिकुञ्ज परिवार ने शिविरार्थी साधकों एवं देसंविवि के विद्यार्थियों के साथ मिलकर हरिपुर कलाँ एवं देसंविवि होते हुए तीन किलोमीटर की जनजागरण यात्रा निकाली। गुरुसत्ता की पावन समाधि पर आकर प्रेरक उद्बोधन, आरती, जयघोष के साथ रैली का समापन हुआ। सबने मिलकर अपने गुरुदेव के आदर्शों को अपनाते हुए सारे विश्व में देव संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित होने का उद्घोष किया।

**सांस्कृतिक संध्या :** 8 जुलाई की सायं सांस्कृतिक संध्या 'एक शाम गुरुवर के नाम' का आयोजन हुआ। इसमें गायत्री विद्यापीठ के बच्चों एवं शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं ने गुरु-शिष्य परंपरा का गौरवगान करते हुए भजन, गीत व सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

**विशेष पर्व संदेश :** 9 जुलाई को गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख आदरणीया शेफाली जीजी, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, जोन समन्वयक श्री ओ.पी. शर्मा जी, जन्मशताब्दी विभाग समन्वयक श्री श्यामबिहारी दुबे जी ने साधकों को संबोधित करते हुए विशिष्ट प्रेरणाएँ प्रदान कीं।

**चान्द्रायण व्रत साधना एवं वृक्षारोपण मास का शुभारंभ :** अखिल विश्व गायत्री परिवार के हजारों साधक हर वर्ष गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक विशेष चान्द्रायण व्रत साधना करते हैं। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इन साधकों को ऑनलाइन संकल्प दिलाए। इसी के साथ वृक्षारोपण मास का शुभारंभ भी हुआ।

## गुरुपूर्णिमा पर नया साहित्य विमोचन

- **शान्तिकुञ्ज पंचांग 2026**
- **पुस्तक: माँ की संस्कारशाला (भाग 5 एवं 6)**
(जन्म से लेकर 8 वर्ष के बच्चों को संस्कारित करने हेतु माताओं के लिए पाठ्यक्रम जो कि 12 अंको में प्रकाशित होगी)
- **इलेक्ट्रोनिक मीडिया डिपार्टमेन्ट, शान्तिकुञ्ज द्वारा प्रकाशित**
  1 परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के जीवन पर आधारित हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में डॉक्यूमेंट्री
  2 आडियो बुक - चेतना की शिखर यात्रा
  3 बाल निर्माण की कहानियों पर आधारित वीडियो

- **पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का राजस्थान संस्करण**
- **बच्चों के लिए पुस्तक (हिन्दी) :** आओ खोज करें ऋगवेद में वर्णित विज्ञान की
**बच्चों के लिए पुस्तक (अंग्रेजी) :** एक्सप्लोरिन्ग साइन्स इन ऋगवेद
(सुश्री प्राची माथुर ने इन पुस्तकों का संकलन किया है।)
- **पुस्तक (बांग्ला) :** गुरुदेवेर गान संपद (भाग 2)
हिन्दी पुस्तक 'गुरुवर की धरोहर-2' का अनुवाद। अनुवादक प्रिती सिन्हा, कोलकाता
- **चार पुस्तकें (छत्तीसगढ़ी भाषा में) :**
अनुवादक श्री पुनीत गुरुवंश, शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता

# गुरु पूर्णिमा पर्व का संदेश

## श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

### सद्गुरु कौन?

सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपने आप को समझें। सद्गुरु के मिलते ही यह खोज आरंभ हो जाती है। जो हमें स्वयं की वास्तविकता से परिचित करा दे, वही सद्गुरु है। जब तर्क-वितर्क हमें भ्रमित करते हैं, हमारी श्रद्धा भावुक हो जाती है, तब सही मार्ग दिखाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु हमें अपनी जीवन सम्पदा से परिचित कराते हैं, हमारी खोई हुई शक्ति को पुनर्जागृत करते हैं।

हमें अपनी श्रद्धा के अनुरूप ही सद्गुरु से अनुदान-वरदान मिलते हैं। राम तो बंदर, भालू को मिले थे, असुरों और मानवों को भी मिले थे, लेकिन उनसे हनुमान जी को जो अनुदान मिले वह दूसरों को नहीं मिल सके। हनुमान जी ने मन, वचन, कर्म से भगवान राम का गुरुरूप में वरण कर लिया था। गुरु अपने शिष्य की श्रद्धा, भावना को ही देखते हैं।

## श्रद्धेया शैल जीजी

### श्रद्धा की सामर्थ्य

गुरुपूर्णिमा श्रद्धा के आरोपण और आरोहण का दिन है। श्रद्धा जब फलीभूत होती है, तो पत्थर में भी प्राण आ जाते हैं। जब एकलव्य के मन में श्रद्धा उपजी थी तो मिट्टी के द्रोणाचार्य भी एकलव्य को वह सिखा गए थे, जो स्वयं द्रोणाचार्य अर्जुन को नहीं सिखा पाये थे। मीरा के पत्थर के कृष्ण गोपाल जहर का प्याला पी गए थे। कलकत्ता में दक्षिणेश्वर की काली तो आज भी वही है, जिसे स्वामी रामकृष्ण परमहंस अपने हाथों से भोजन कराया करते थे। क्या हमारी श्रद्धा इतनी फलीभूत हो सकी, जिसके कारण माँ को अपने बेटे के हाथ से भोजन करने के लिए मूर्ति में प्रकट होना पड़े?

### गुरुदेव-माताजी का आश्वासन

परम वंदनीया माता जी सन् 1994 में यहाँ नहीं थीं, दिल्ली में थीं। उनका स्वास्थ्य कमजोर था। उन्होंने कहा, बच्चे अपने बीच हमें न पाकर विकल होंगे, सोचते होंगे हमारी बात कौन सुनेगा? उनसे कहना कि माँ शरीर से कहीं भी रहे, पिता शरीर से कहीं भी रहें, लेकिन उनका ध्यान हमेशा अपने बच्चों पर बना रहता है। हम हमेशा अपने बच्चों के सुख-सौभाग्य की कल्पना करते हैं। हम हमेशा अपने बच्चों के साथ रहेंगे।

### माँ की मनोकामना

चित्रकूट अश्वमेध के समय बच्चों ने माता जी को पर्वत पर ले जाने के लिए उनकी पालकी को अपने कंधों पर उठा लिया था। तब वे बोलीं, ''बच्चो! जब कंधें पर उठा ही लिया है तो अब नीचे मत उतरने देना। मुझे पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक, भारत से पूरे विश्व तक पहुँचा देना। यदि यह कर सके तो तुम्हारा श्रवण कुमार बनना सार्थक हो जाएगा।

## आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

### हम सच्चे हीरे बनें,

गुरु पूर्णिमा का पावन अवसर जीवन के सौभाग्य की याद दिलाने आता है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सौभाग्य के साथ उत्तरदायित्व भी जुड़े होते हैं। जो अपने उत्तरदायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हैं, उन्हीं के जीवन में सौभाग्य की वृष्टि होती है।

पू. गुरुदेव ने अपने बच्चों से जिन हीरों की अपेक्षा की थी, उन हीरों को निकालने का समय आ गया है। जिनको न संसार की अवाज सुनाई पड़ती है, न परिवार की; जिन्हें सिर्फ और सिर्फ गुरुदेव और माता जी की आवाज सुनाई पड़ती हो, ऐसे लोग वह सच्चे हीरे हैं, जिनकी चाह परम पूज्य गुरुदेव को है। यदि हम लोग ऐसे हीरे बन सके तो हमारे जीवन का यह परम सौभाग्य होगा।

### नींव के पत्थर बनें

हम अगर पत्थर बनें तो नींव के पत्थर बनें। सौ-सौ हथौड़े खा लें, लेकिन आने वाली पीढ़ियों के लिए सौभाग्यशाली आशियाना बनाकर जायें। भगवान हमें पत्थर बनाये तो मील का पत्थर बनाये जो लोगों को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की ओर मोड़ सके। हम वह पत्थर बनें जिसमें से भगवान की प्रतिमा उकेरी जा सके।

## आदरणीय श्री योगेन्द्र गिरि जी

### कार्यकर्ता पाथेय

आप अपने अंदर के स्वयं सेवक को हमेशा जिंदा रखना, चाहे कोई भी जिम्मेदारी मिल जाए। 'प्र' हटा कर 'भारी' कभी मत बनना, केवल स्वयं सेवक बने रहना। हमेशा अपने अंदर स्वयंसेवक के भाव को जीवित रखने की कोशिश करना, तभी हम परम पूज्य गुरुदेव के कार्यों को क्षेत्रों में अच्छे तरीके से कर सकते हैं।

यदि गुरुदेव से जुड़कर हम स्वयं को धन्य मानते हैं, तो यह भी ध्यान रखें कि जो हमारे सम्पर्क में आएँ, वे हमारे व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से प्रभावित होकर अपने को धन्य अनुभव करें।

अखंड दीप और वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी एक साथ हैं। यह हमारे लिए करो और मरो का समय है। यह चिंता नहीं करनी है कि कौन सहयोग करेगा, साधन सामग्री कहाँ से आएगी, इसकी चिंता गुरुदेव करेंगे। बस एक ही बात का ध्यान रहे कि हमारे पुरुषार्थ में किसी भी प्रकार की कमी न रहने पाए।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
**संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

**सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ**
**फोन :** 01334-311004
9258369725
**ईमेल :** pragyaabhiyan@awgp.org
**समाचार प्रेषण :** news@awgp.org

**Publication date: 27.07.2025**
**Place: Shantikunj, Haridwar**
**RNI-NO.38653/ 1980**
**Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26**
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26